चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र





बच्चों, तुमने समुन्दर तो देखा ही होगा ! देखने में वह कैसा नीला और कैसा सुन्दर होता है ! उसकी गहराई की थाह पाना बहुत कठिन है। कहते हैं , समुन्दर में भी बड़े बड़े पहाड़, छोटे छोटे टीले , और बहुत ही सुन्दर हुफाएँ हैं। समुन्दर में रहने वाले गुफाओं में रहते हैं। लेकिन वह गुफाएँ हमारे घरों और महलों से कहीं ज्यादा खूबसूरत होती हैं। उन गुफाओं की दीवारें मूँगों की और छतें मोतियों की होती हैं। हीरे-जवाहरातों से जड़ी हुई वे गुफाएँ दिन रात जगमगाती रहती हैं। उनमें और कोई रोशनी करने की जरूरत नहीं होती। उन गुफाओं में सिन्धुराज की पुत्रियाँ, नाग-कन्याएँ रहती हैं। उन नाग-कन्याओं के भौरों से काले-काले बाल होते हैं। उनके मुँह की दमक से उन गुफाओं की रौनक और भी बढ़ जाती है। ये सोने के तारों से बुने हुए झीने कपडे पहनती हैं और उनके घुँघराले बाल सागर की तरङ्गों के साथ साथ लहराते रहते हैं। जब उन गुफाओं में रहते रहते उन नाग - कन्याओं का मन उचट जाता है , तब वे सैर करने निकल पड़ती हैं। उतने बड़े राजा की लड़कियाँ, वे पैदल कैसे चलें ! नहीं, उनके लिए सीपियों से बने हुए सुन्दर रथ तैयार रहते हैं। उन रथों में सुनहरी मछलियाँ जोती जाती हैं। वे नाग-कन्याएँ उन रथों पर चढ़कर अक्सर आधी रात के वक्त समुन्दर के तट पर आती है। यहाँ के मुलायम बालू पर बैठकर वे तरह-तरह के खेल खेला करती हैं और हमेशा सूरज उगने से पहले ही चली जाती हैं। हमेशा रातों रात खेलने के कारण उन्होंने कभी सूरज का उगना नहीं देखा। उन्हें यह भी नहीं मालूम कि सूरज होता कैसा है !

गोपालकृष्ण

अच्छा, तो एक बार कुछ नाग-कन्याएँ इसी तरह समुन्दर के तट पर खेलने आईं। वे सारी रात खेलती रहीं और सूरज के उगने से पहले ही चली गई। लेकिन उनमे से एक ही बहुत सुन्दर नाग-कन्या भूल से पीछे छूट गई। वह खेलने के लिए सबसे अलग, अकेली, बहुत दूर चली गई थी। जब तक वह लौट आई, उसकी सब सहेलियाँ अपनी अपनी गाड़ियों में बैठकर चल चुकीं थी। अब वह बेचारी क्या करती ? वह विलकुल अकेली एक चट्टान के ऊपर बैठी रही। थोड़ी देर में उसे पूरब से एक अज़ीब रोशनी निकलती दिखाई दी। वह एक-टक उसकी ओर देखने लगी। क्योंकि उसने पहले कभी सूरज को निकलते नहीं देखा था। आज उसे यह देखकर बड़ा आनन्द हुआ। उसने सोचा - "अरे ! यह क्या है ! ऐसा सुन्दर दृश्य तो मैंने पहले कभी नहीं देखा था !"

इतने में सूरज पूरा निकल आया और उसे आकाश में एक सुन्दर राजकुमार सात घोड़ों वाले रथ पर बैठा, घोड़ों को हाँकता हुआ दिखाई दिया। ऐसा अच्छा रथ और ऐसे सुन्दर घोड़े उसके पिता के पास भी



न थे। ऐसा सुन्दर राजकुमार तो उसने कभी देखा ही न था। उसने सोचा - " अगर यह सुन्दर राजकुमार मुझे अपने साथ रथ में बैठा ले चले तो कितना अच्छा हो!" इस तरह वह दिन भर वहाँ बैठी सूरज की और देखती रही। सूरज के साथ साथ उसकी नज़र भी दौड़ती रही।

धीरे धीरे सूरज पहाडों में छिप गया। रात हो आई। थोड़ी देर में उसकी हमजोलियाँ भी समुन्दर के किनारे पे खेलने आ गई। उसने दिन भर जो जो देखा सुना था सब सखियों को कह सुनाया। इन्हीं बातों में फिर रात बीत चली। उसकी सब सखियाँ घर लौटने लगीं। लेकिन वह अपनी जगह से न हिली न डुली। सखियों ने बुलाया तो उसने कहा -"मैं नहीं आऊँगी। मैं यहीं बैठ कर उन महाराज की राह देखूँगी।" सखियों ने उसे समझाया - "वे महाराज आएँगे नही। तेरा हट बेकार है।" लेकिन वह टस से मस न हुई।

सूरज महाराज अपने रथ पर फिर आ गए। वह नाहक आस लगाए बैठी रही कि वे उसे बुलाकर रथ में बैठा लेंगे और अपने साथ ले जाएँगे। पर महाराज ने उसकी

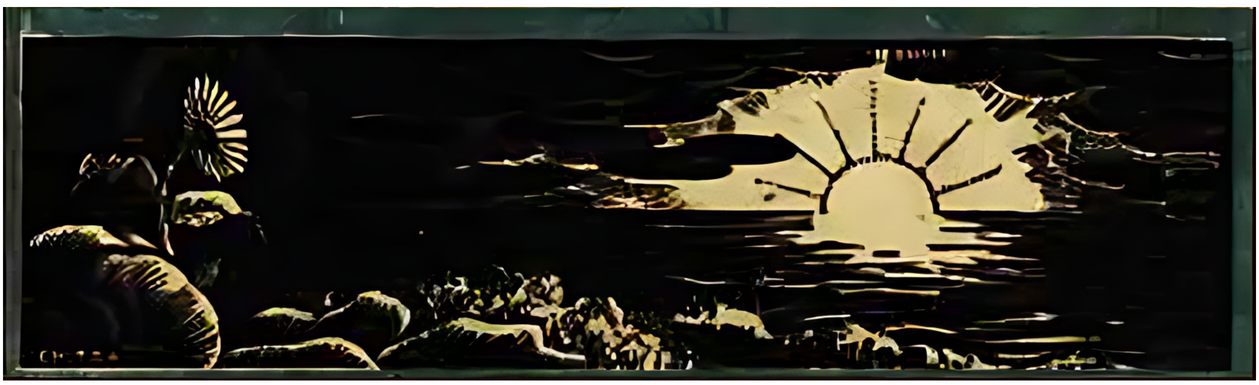


ओर आँख उठा कर देखा तक नहीं। इसी तरह कई दिन बीत गए और वह ज्यों की त्यों बैठी रही। सूरज महाराज ने उसकी और ध्यान न दिया। उसने सोचा , जरूर कोई न कोई कारण होगा। शायद वह जहाँ बैठी है , वहाँ से उनको अच्छी तरह दिखाई न देती होगी। यह सोच कर उसने वहाँ से उठने की कोशिश की। लेकिन अब उसे मालूम हुआ कि वह वहाँ से हिल-डुल भी नहीं सकती। उसके दोनों पैर धरती में धँस कर जड़ फैला चुके थे। धीरे धीरे उसकी देह भी सूख कर एक पौधे सी हो गई और उसमें पत्ते भी निकल आए। उसके काले काले केश बदल कर सुनहरा पराग बन गए और उसका मुँह धीरे धीरे एक सुन्दर फूल हो गया।

पर यह फूल मामूली फूल नहीं है। बड़ा ही निराला फूल है। जब सूरज सवेरे सवेरे अपने सात घोड़ों वाले सोने के रथ पर बैठकर पूरब से निकलता है तब वह फूल उसकी और मुँह करके दीन-स्वर में गिड़गिड़ाकर कहता है - "महाराज ! क्या अब भी आपको मुझ पर दया नहीं आएगी? क्या अब भी आप इस दासी को अपने साथ न ले जाएँगे?" दोपहर को जब सूरज ठीक हमारे सिर पर आ जाता है , तब यह फूल भी ठीक उसी की और मुँह करके खड़ा हो जाता है। शाम को वह सूरज के साथ साथ पश्चिम की और मुड़ने लगता है।

बच्चों ! अब तुम समझ गए न कि यह कौन-सा फूल है ? इसी को सूरजमुखी या सूर्यमुखी कहते हैं। बड़े-बूढ़ों का कहना है कि यह नाग-कन्या आज तक इस फूल के रूप में सूरज के लिए तप कर रही है!

इसी से इस फूल को सूरजमुखी कहते हैं।





वह एक बहुत बड़े अमीर की औरत थी। उसके घर में सोना-चान्दी, हीरे-जवाहर भरे पड़े थे। वह रेशम की वेश-क़ीमत साड़ियाँ पहनती थी। सुबह शाम दोनों वक़्त वह कपडे बदलती और कोई भी साडी एक दफ़ा पहन लेने के बाद फिर उसे दुबारा नहीं पहनती थी। उसकी बहुत सी दासियाँ थी। कोई काम अपने हाथों करने की ज़रुरत न थी। उसके पति भी उसे बहुत प्यार करते और जो चीज़ माँगती तुरन्त ला देते। गरज़ कि दुनियाँ में उसे किसी चीज़ की कमी न थी। लेकिन नहीं; उसे एक चीज़ की बड़ी कमी थी और वह भी ऐसी चीज़, जो भगवान के सिवा और कोई नहीं दे सकता। यानी उसके कोई वाल-बच्चे न थे।

जब पास-पड़ोस की औरतों की गोद में वह बच्चों को खेलते देखती तो उसके कलेजे में एक हूक पैदा हो जाती। वह मन-ही-मन जलने लगती। उस जलन को बुझाने के लिए वह और भी सज-धज कर, और भी बन-ठन कर बाहर निकलती। अडोसी-पड़ोसियों के घर जा कर उन्हें अपनी वेश-कीमती साड़ियाँ और गहने दिखाती।

जब अडोस-पड़ोस के सब लोग उसकी शान-बान और ठाट-बाट देख कर दङ्ग रह जाते तो उसको मन ही मन बड़ी खुशी होती। उसका मन हमेशा जलता रहता था। इसलिए दूसरों को जलाने में, अपने गहने कपडे दिखाकर उनको ललचाने में उसे बड़ी ख़ुशी होती थी।



एक दिन वह रोज़ की तरह खूब बन ठन कर अकड़ती हुई एक गरीबिन के घर गई। उस घर में माटी की हाँडियों और कुछ फटे पुराने चीथड़ों के सिवा और कुछ नहीं था। वह गरीबिन उस वक़्त कपडे साफ करने में लगी हुई थी। इसलिए वह इस मेहमान की अच्छी आव-भगत न कर सकी। यह देख कर अमीर औरत को बड़ा गुस्सा आया। उसने सोचा -" अरे ! यह कितनी घमन्डिन है। ठीक तो है , इन काङ्गालिनों को हम अमीरों की खातिर करना क्या मालूम ! लेकिन यह किस बल पर इतनी फूली हुई है ! घर में तो भूँजी भाँग नहीं है ! फिर यह अकड़ कैसी ?" ऐसा सोच कर उसने उस गरीबिन से कहा - "क्यों बहन ! तुमने कभी मुझे अपने गहने कपडे नहीं दिखाए ! अगर तुमको कोई तकलीफ न हो तो मुझे ज़रा दिखा दो न ! लोग तो कहते हैं , तुम जैसी बड़-भागिनी कोई नहीं है। "

गरीबिन ने जवाब दिया -" अजी, मेरे गहने-कपडे तो अभी बाहर गए हैं। थोड़ी देर में आ जाएँगे। ज़रा बैठ जाइए तो सब कुछ देख लीजिएगा। "

अमीर औरत वहीँ बैठ गई और मन ही मन सोचने लगी -"कैसे हैं इस औरत के गहने-कपडे जो चलते-फिरते भी हैं। यह तो कहीं नहीं सुना कि गहने-कपडे घूमने फिरने जाते हैं। तब तो वे बड़े निराले गहने होंगे। अच्छा , थोड़ी देर में सब मालूम हो जाएगा। "

इतने में दो खूब-सूरत बच्चे हँसते हुए , किलकारियाँ भरते हुए आए और दौड़ कर उस गरीबिन से लिपट गए और ठोड़ी पकड़

कर कहने लगे -" माँ, माँ, देखो तो आज हमें स्कूल में कैसे कैसे इनाम मिले हैं ? मास्टर साहब ने कहा था -'अगर तुम हर साल अव्वल आओगे तो हर साल तुम्हे इनाम मिलेंगे। ' माँ, अब हम और भी मन लगा कर पढ़ेंगे। " माँ ने उन दोनों बच्चों को गोद में ले कर चुम लिया और अपने मेहमान की तरफ देख कर कहा -"बहन , देखिए , यही मेरे हीरे-जवाहर और पट- पाटम्बर हैं। मेरे लिए यही सब कुछ हैं। मुझ गरीबिन को और क्या चाहिए ! आप ही बताइए, क्या ये कम सुन्दर हैं ?"

ये बच्चे क्या थे, मनो लाल-रतन के पुतले थे ! उन्हें देख कर वह अमीर औरत पानी-पानी हो गई। उसने दोनों हाथ जोड़ कर गरीबिन से कहा -"बहन ! क्षमा करो। आज मेरी आँखों का पर्दा हट गया। लोग कहा करते थे , आप जैसी बड़-भागिनी कोई नहीं है। मैं बेवक़ूफ़ अपने मन में सोचती –"ज़रा जा कर तो देखूँ वह कैसी धनवान है ?" आज मुझे मालूम हो गया कि आप कितनी बड़-भागिनी हैं। मेरे



पास गहने कपडे तो हैं ; लेकिन सच्चा धन तो आपके पास है। मैं अब जाती हूँ। मुझ पर आपकी कृपा बनी रहे। " यह कह कर वह घर चली गई।

उस दिन से वह अमीर औरत बिलकुल बदल गई है। अब उस में गर्व का लेश भी नहीं रह गया है। अब वह अपने हाथ से घर के सब काम-काज करती है। पड़ोसिनें भी अब उसे बहुत प्यार करती हैं। कहते हैं कुछ दिनों में वह एक बच्चे की माँ बनने वाली है। तब सचमुछ ही वह अमीर हो जाएगी।



किसी समय राजनगर नाम का एक शहर था। उस शहर का राजा बड़ा धनवान था। उसके ख़ज़ाने में हीरे-जवाहरात की भरमार थी। उसके पास फ़ौज भी बेशुमार थी। आस-पड़ोस के सब राजा उसकी धाक मानते थे। संसार में उसे किसी चीज़ की कमी न थी।

लेकिन न जाने क्यों , वह राजा हमेशा उदास रहा करता था। मन्त्रियों ने बहुत बार उससे इस उदासी का कारण पूछा। रानियों ने भी बहुत प्रयत्न किये। पर किसी को उसकी उदासी का कारण नहीं मालूम हो सका। आखिर लोग हार कर चुप रह गए।

असल में उस राजा की उदासी का भेद यह था कि उसके कान गधे के से थे। उसका यह भेद उस राज्य में उसके नाई के सिवा और कोई नहीं जानता था। नाई को अपनी जान का डर था, इसलिए वह भेद छिपाये हुए था।

जब पहली बार नाई ने राजा की हज़ामत बनाई , तभी राजा ने उसे चेता दिया -" अरे ! देख इधर ! मेरे राज में कोई यह भेद नहीं जानता। एक तू ही जानता है। इसलिए ख़बरदार ! अगर किसी को इसकी ज़रा भी भनक लगी तो तेरी खैर नहीं। बोटी बोटी उड़वा दूँगा। समझ गया न !"

नाई ने कहा -"जी हुज़ूर , खूब समझ गया। क्या मेरे वाल-बच्चे नहीं हैं ! महाराज बेफिक्र रहें। यह भेद कोई नहीं जान सकेगा।" महाराज ने खुश हो कर उसको पाँच अशर्फियाँ इनाम में दी।

महाराज को यह वचन दे कर नाई घर आया। लेकिन उसके पेट में यह बात नहीं पच सकी। डर के मारे वह किसी से कुछ कह भी नहीं सकता था। बस, क्या था ! उसका पेट फूल फूल कर कुप्पा बन गया और वह बीमार रहने लगा।

उसको बीमार देख उसकी औरत ने एक बैद को बुलाया। बैद ने आकर नाड़ी देखी और थोड़ी देर तक सोच-बिचार कर कहा -"देखो , तुम्हारे पेट में कोई भेद छिपा है। इसी से तुम्हारा पेट फूल गया है और तुम बीमार पड़ गए हो। तुम किसी से वह भेद खोल दो तो तुम्हारी बीमारी छू-मन्तर हो जाय और तुम चङ्गे हो जाओ। अगर वह कोई बहुत भारी भेद हो तो, तुम और किसी से न सही, काम से काम अपनी औरत से तो कह दो। तुम इतना कर लो , तो और सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा।" यह कह कर बैद जी अपने घर चले गए।

नाई की औरत भी वहीं खड़ी थी। बैद्य के चले जाने के बाद उसने पूछा -"अजी , यह भेद क्या है जिसके कारण तुम्हारा पेट फूल गया है ! मुझे क्यों नहीं बता देते ? तुम तो जानते हो मेरे पेट में बात कैसी आसानी से पांच जाती है। वह भेद मुझे बता दो। मैं कसम खाती हूँ , किसी को ज़रा भनक भी नहीं लगने दूँगी। "

हाँ , नाई क्यों न जानता ? वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी



बीवी के पेट में कोई बात नहीं पचती। उसकी औरत क्या थी , एक चलती फिरती रेडियो ही थी। उस के मारे सारे शहर के नाकों दम था । उसने कहा -"हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ, तुम बात छिपाने में कितनी होशियार हो। लेकिन मेरा यह भेद बिलकुल मामूली बात है। इसलिए सबसे अच्छा यही होगा कि मैं जा कर उसी बैद को यह भेद बता आऊँ।" यह कह कर वह बैद के घर चला गया। बैद जी घर पर ही थे। नाई को फिर आते देख कर उन्होंने पूछा -"क्यों , क्या बात है? तुम फिर यहाँ क्यों आए ? मैं अभी तो तुम्हारे यहाँ से आया हूँ।"



"क्या कहूँ बैद जी ! आप तो यह कह कर चले आए कि अपनी औरत से भेद खोल दो। उस समय मेरी औरत वहीं खड़ी थी। इसलिए मैं आप से कुछ नहीं कह सका। लेकिन अब कहता हूँ, सुनिये। मेरी औरत के पेट में छोटी सी बात भी नहीं पचती। आप उसको नहीं जानते। नहीं तो बैसी सलाह न देते। और तह तो कोई ऐसा बैसा रहस्य नहीं है। अगर कहीं यह रहस्य खुल गया तो मेरा सर भुट्टे की तरह उड़ जाएगा। लेकिन मैंने एक अच्छा उपाय सोच लिया है। अगर आप मुझे वचन दें कि यह भेद किसी से नहीं खोलेंगे तो मैं आप ही को बता दूँ। "

बैद ने मुँह बिचकाते हुए कहा -"जा , जा , आया है बड़ा भेद खोलने वाला! जा कर और किसी को ढूँढ ! मैं क्यों नाहक़ यह वला अपने सिर मोल लूँ?"

"लेकिन बैद जी ! आप ही बताइए मैं और किसको ढूँढूँ ? कहीं ऐसा न हो कि मैं किसी से यह भेद कह दूँ और वह जाकर सारे शहर में ढिण्ढौरा पीट दे। उस से अच्छा हो अगर आप ही कृपा करके मेरा बोझ हल्का कर दें। " नाई ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"नहीं , यह कभी नहीं हो सकता। तुम्हारा भेद सुननेवाला कोई नहीं मिलता है तो मैं क्या करूँ ? कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा भेद सुनते ही मेरा पेट भी फूलने लग जाय !

मैं ऐसा उल्लू नहीं जो जान बुझ कर आग में कूद पड़ूँ। जा ,जा , अगर तेरा भेद सुननेवाला कोई नहीं मिला तो जाकर किसी दीवार से , पेड़ से या साँप के बिल से कह दे। " बैद ने चिढ़ कर जवाब दिया।

नाई ने सोचा -"वाह ! यह तो खूब अच्छी सूझी। सचमुछ ही जाकर किसी बॉबी में अपना भेद क्यों न खोल दूँ ?" यह सोच कर दौड़ता दौड़ता वह शहर के बाहर चला

गया। वहीँ नजदीक की झाड़ियों में एक बाँबी थी। नाई ने चारों ओर देखा तो आसपास आदमी क्या कोई पशु-पक्षी भी नजर न आया। ब। उस बाँबी से मुँह सटाकर उसने अपने पेट का भेद खोल दिया -"हमारे राजा के कान गधे समान हैं। " इतना कहते ही उसकी छाती पर से मानो एक पहाड़ हैट गया। वह बिल्कुल चङ्गा होकर खुशी-खुशी घर लौट आया।

नाई ने जिस बाँबी में अपना भेद खोल था, उसी के ऊपर कुछ दिन के बाद एक बाँसों का झुरमुट उगा आया।

उसके दो-तीन महीने बाद राजा के यहाँ कोई भोज हुआ। उस भोज की चहल पहल के लिए सब तरह के बाजे बजाने वाले बुलाए गए। उनमें से एक बाँसुरी वाला भी था जिसके पास कोई अच्छी बाँसुरी न थी। उसने सोचा -"चलो , शहर के बाहर जो बाँसों का झुरमुट है उसमें से एक बाँस काटकर एक नई बाँसुरी बना लूँ । यह सोचकर संयोग से वह इस बाँबी वाले झुरमुट के पास पहुँचा और एक बाँस काट कर अच्छी सी बाँसुरी बना ली। उसने वह बाँसुरी



राजा के दरबार में बजाने के लिए रख छोड़ी।

भोज के दिन वह बाँसुरी वाला ठीक समय पर राजमहल में हाजिर हुआ। सब बजे वाले के बाद उसकी भी बारी आई और उसने खुशी-खुशी बाँसुरी उठाई। लेकिन यह क्या ?बाँसुरी से एकाएक यह क्या शब्द निकला ? "राजा के कान गधे सामान!" सारे दरबारी चौंक पड़े और उसकी और अचरज से देखने लगे। बाँसुरी वाले को तो काटो तो खून नहीं। उसने फिर बजाया। फिर वही शोर निकला -"राजा के कान गधे सामान !"

राजा का मुँह गुस्से से लाल हो उठा। तलवार खींच कर वह बाँसुरी वाले की और झपटा कि एक ही वार में उसका काम तमाम कर दें। लेकिन -

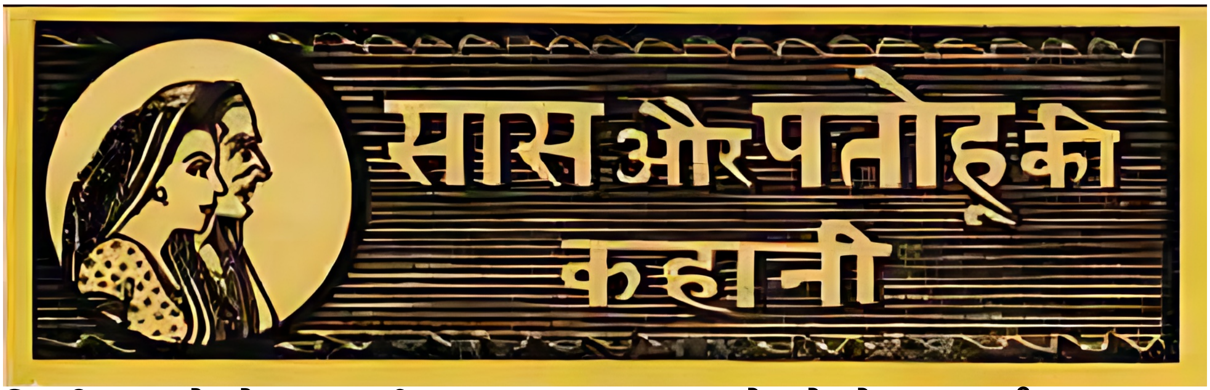
"ठहरिए महाराज ! ज़रा सोच-विचार लीजिये ! इसमें मेरा कोई दोष नहीं। यह बाँसुरी अपने आप ही ऐसा बोल उठी है। बिश्वास न हो तो एक बार आप ही जाञ्च कर लीजिए।" बाँसुरी वाले ने डरते डरते कहा।

"अच्छा, मैं अभी इसकी जाञ्च करते हूँ। अगर तेरी बात सच न निकली तो बस, जिन्दा गढ़वा दूंगा।" यह कह कर राजा ने बाँसुरी उठाई और बजाने लगा। बाँसुरी से फिर वही सुर निकला -" राजा के कान , गधे के समान !" सब लोग सन्नाटे में आ गए। राजा माथे पर हाथ रख कर बैठ गया और थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर उसने धीरे धीरे अपना मुकुट उतार कर नीचे रख दिया और कहा -" इस बाँसुरी का कहना ठीक है। मैं ही अब तक आप सब लोगों को धोखा देता आया हूँ। सचमुछ मेरे कान गधे के समान हैं।"

राजा के लम्बे लम्बे कान देख कर सब लोग अचरज में डूब गए। उन में से कुछ लोगों ने राजा को समझा कर कहा -"अगर आपक के कान गधे के समान हैं तो उसमें आपका क्या दोष ? जब भगवान की ऐसी मर्ज़ी है तो आप क्या कर सकते हैं ?" इस तरह उन्होंने बहुत तरह से समझाया कि गधे के से कान होने में कोई हर्ज़ नहीं है।

धीरे धीरे राजा की सारी उदासी दूर हो गई। अब वह निश्चिन्त हो कर राज करने लगा। लेकिन जब कभी वह बाँस के उस झुरमुट के पास पहुँच जाता है, तो सुनता है - "राजा के कान , गधे के समान !" डर के मारे वह उसे कटवा भी नहीं सकता।





किसी ज़माने में एक परिवार था। उस परिवार में तीन बहुएँ थीं। उन तीनों में आपस में बिलकुल बनती न थी। जब कभी उनके घर कोई नातेदार आ जाते तो उनको भोजन परोसने के लिए तीनों में होड़ लग जाती। तीनों झगड़ने लगतीं -"मैं परोसूँगी , नहीं ,मैं परोसूँगी" सास ने उनको बहुत समझाया कि "देखो ! इस तरह झगड़ने से गाँव -घर में हमारी बदनामी होगी। "लेकिन वे क्यों मानतीं ? आखिर सास ने कहा - "बड़ी बहू को पत्तल डाल कर पानी छिड़कना होगा। मँझली को खाना परोसना होगा। छोटी बहू को जूठे पत्तल उठा कर बाहर फ़ेंक देना होगा।"

इस इन्तजाम के बाद बहुओं ने झगड़ना छोड़ दिया। सास भी बहुत खुश हुई।

इस हालत में एक रोज़ उनके घर कोई मेहमान आ गए। सास ने बहुओं को बुलाकर कहा -"तुम तीनों अपना अपना काम जल्दी जल्दी कर लो। देखो , सफाई का ख्याल रखना। तीनों बहुओं ने सिर हिला कर हामी भर दी।

मेहमान हाथ-पाँव धो कर आ गए। बड़ी बहू ने जल्दी जल्दी उनके सामने पत्तल डाल कर पानी छिड़क दिया। वे बहुत खुश हो गए। मँझली बहू ने जल्दी जल्दी पकवान बगैरह लाकर परोस दिए। मेहमान और भी खुश हो गए कि पालक झपकते खाना परोसा गया। इतने में तीसरी बहू आई और उसने सबसे जल्दी पत्तलें उठाकर बाहर फ़ेंक दी। मेहमान लोग एक दूसरे का मुँह ताकते रह गए।

सास ने मुँह बिगाड़ कर पूछा -"बहू ! तू ने यह क्या किया ?"

"ठीक तो किया है। आपने जो आज्ञा दी थी उसी के अनुसार हम में से हर एक ने अपना काम जल्दी जल्दी सफाई के साथ कर दिखाया है। " तीनों बहुओं ने एक साथ जवाब दिया।

कमल कुमारी



एक जङ्गल में एक कौआ रहता था। उसकी एक लाड़ली बिटिया थी। उस ज़माने में लड़के और लड़कियाँ दोनों पढ़ा करते थे। सब लोग पढ़े लिखे होते थे। कौए ने सोचा -"जब सब लोग पढ़ते हैं , तो मेरी बिटिया क्यों न पढ़े ?" यह सोचकर उसने अपनी बिटिया को खूब पढाया-लिखाया।

उस ज़माने में सब लोग गाया-बजाया करते थे। जिनकी आवाज़ सुरीली होती उनकी बात छोडो, जिनकी आवाज़ सुरीली न होती वे भी गाते-बजाते थे। यह देख कर कौए ने अपनी बिटिया को भी गाना-बजाना सिखवाया ।

उस ज़माने में क्या सुन्दर और क्या कुरूप, सभी लोग नाचना सीखते थे। इसलिए कौए ने अपनी बिटिया को नाचना भी सिखवाया। इस तरह तीनों कलाओं में कौआ-बिटिया होशियार हो गई। ठीक तो है ! अपना दही किसको मीठा नहीं लगता ?

हाँ , तो एक दिन कौआ -रानी को कहीं से मांस का एक टुकड़ा मिल गाया। वह ख़ुशी के साथ उसे चोञ्च में दबा कर एक डाल पर खाने बैठ गई। इतने में सियार मामा ने उसे देख लिया। बच्चों, तुम सियार मामा की चालाकी तो जानते ही हो। बस, मामा ने सोचा कि चलो , इसको चकमा दे कर किसी न किसी तरह मांस का टुकड़ा उड़ा लें।

सियार धीरे धीरे उस पेड़ के नीचे आ गाया जहाँ कौआ-बिटिया बैठी थी। आते ही



वह कहने लगा -"बिटिया ! तुम तो खूब पढ़ी-लिखी हो न ?"

कौआ -बिटिया तो सचमुछ पढ़ी-लिखी थी ही। इसलिए वह सियार की चालाकी समझ गई। उसने बच्चों की किताब में यह पढ़ा भी था कि एक समय एक सियार ने कैसे एक कौए को चकमा दिया और उसके मुँह से रोटी का टुकड़ा उड़ा लिया था। इसलिए कौआ-बिटिया सचेत हो गई। वह समझ गई कि सियार के सवाल का जवाब देने के लिए जैसे ही वह मुँह खोलेगी, मांस का टुकड़ा नीचे गिर जाएगा और सियार उसे अपने मुँह में रखकर नौ-दो-ग्यारह हो जाएगा। कौआ-बिटिया पढ़ी-लिखी तो थी ही। इसलिए सियार के सवाल का जवाब उसने सिर्फ सिर हिलाकर दे दिया।

जब सियार ने देखा कि उसकी यह चाल बेकार गई तो उसने और एक चाल सोची। बड़े प्रेम से वह कहने लगा -" बिटिया ! मैंने सुना है कि तुम बहुत अच्छा गाती हो और मुझे गाना सुनने में बड़ा आनन्द आता है । तुम ज़रा एक दो गाना गाकर सुना दो न ?" अपनी बड़ाई सुनकर कौन नहीं फूल जाता ? सियार की खुशामद भरी बातें सुन कर कौआ-बिटिया भी फूल गई और गाने की तैयारी करने लगी। लेकिन थी तो वह पढ़ी-लिखी ! इसलिए उसने पहले मांस का टुकड़ा चोञ्च से निकाल कर चंगुल में दबा लिया और फिर गाना गाने लगी।

बेचारे सियार की आशा पर पानी फिर गया। लेकिन उसने हिम्मत न हारी। झट एक दूसरा उपाय सोचकर उसने कहा -

"वाह! बिटिया ! कैसे अच्छा गाना गाया तू ने ? मेरी सुध-बुध भूल गई। तू ने गाना क्या गाया कि मेरे कानों में अमृत बरसाया। पर मेरी और एक प्रार्थना है। मैंने सुना है कि तुम बहुत अच्छा नाचती भी हो। लोग तो कहते हैं - पारियाँ भी वैसा अच्छा नहीं नाच सकती। एक बार ज़रा नाच कर दिखा दो तो मुझे भी उसका मज़ा मिले।

सियार की बातें सुनकर कौआ-बिटिया फूली न समाई। अब तक तो वह समझती थी कि उसका नाचना गाना देखकर खुश होनेवाला और तारीफ़ करनेवाला शायद कोई है ही नहीं। आज उसे सियार जैसा पारखी मिल गया। अब उसे और क्या चाहिए था ?

पर यह मांस का टुकड़ा ! वह तो पढ़ी-लिखी थी न? वह अच्छी तरह जानती थी कि खुराक के मामले में कभी बेखबर नहीं रहना चाहिए। "भूखे भजन न होइ गुपाला !"

इसलिए उसने खूब सोच-विचार कर मांस का टुकड़ा फिर मुँह में



रख लिया और नाचने लगी। जब तक कौआ-बिटिया नाचती रही सियार को एक ही सोच था कि मांस का टुकड़ा कैसे उसके हाथ लगे।

जब कौआ-बिटिया का नाचना ख़त्म हो गया तो सियार ने बहुत सोच-विचार कर एक और चाल चली। उसने कहा - "वाह ! वाह ! कौआ-बिटिया ! तुम कैसा अच्छा नाचती हो ? तुम कैसा अच्छा नाचती हो? सचमुछ मेरे भाग्य अच्छे थे जो

मुझको यह सब देखने-सुनने का मौका मिला। किन्तु मेरी एक और विनती है। अगर तुम मेरी यह इच्छा भी पूरी कर दो तो मैं खुशी-खुशी घर लौट जाऊँगा। सचमुछ मुझे इतनी ख़ुशी हो रही है कि मैं भूख प्यास भी भूल गया हूँ। अच्छा, तो कौआ-बिटिया ! मेरा जी चाहता है कि तुम्हे एक साथ गाना गाते और नाचते हुए भी देख लूँ। बोलो, क्या तुम मेरा मन रखोगी ?" कौआ-बिटिया को सियार की तारीफ़ सुनकर इतनी ख़ुशी हुई कि कुछ पूछना नहीं। लेकिन जब गाना और नाचना एक साथ करना होगा तो इस मांस के टुकड़े को क्या किया जाए ? उसने खूब सोच-विचार कर सियार मामा से कहा -"मैं अभी तक नाच-गा कर बहुत थक गई हूँ। अब मैं और नाच-गा नहीं सकती। मुझे भूख सी लग रही है। अगर तुम ज़रा ठहर जाओ तो मैं यह टुकड़ा खा कर अपनी भूख मिटा लूँ। फिर तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँगी। "यह सुनते ही सियार समझ गया कि यहाँ उसकी दाल न गलेगी। इसी टुकड़े के लिए तो उसने इसकी कर्कश काँव-काँव सुनी और भौंडा नाच देखा। जब टुकड़ा ही मिलने का नहीं तो वह और कष्ट क्यों उठाए ? यह सोचकर उसने कहा -"बिटिया ! अच्छा, मैं अभी आता हूँ। तुम इसी डाल पर बैठी रहो। " यह कह कर वह चलता बना।

लेकिन भला कौआ-बिटिया उसे इतनी आसानी से कैसे छोड़ सकती थी ! उसने जल्दी-जल्दी मांस का टुकड़ा निगल लिया और सियार मामा को पुकार पुकार कर नाचना शुरू कर दिया।





एक गाँव में एक लड़का रहता था। देखने में बड़ा सुन्दर, प्यारा प्यारा मुखड़ा, स्वभाव इतना अच्छा कि सारे गाँव के लोग उसे प्यार करते थे। उसके सभी हमजोली उसे पर जान देते थे। उसके एक ही इशारे पर मर मिटने को तैयार थे। वह कभी झूठ न बोलना था। किसी के मन को दुख पहुंचाने वाली बातें ना करता था। हमेशा दीन दुखियों की मदद करने की कोशिश करता। सिर्फ उसके परिवार वालों को ही नहीं सारे गाँव को उस पर अभिमान था। उसमें एक बड़ी अद्‌भुत शक्ति आ गई थी। उसके मुँह से जो बात निकलती वह जरूर होकर ही रहती। इसी से सब लोग उसे "भगत" कहा करते थे।

एक दिन वह अपनी बहन के साथ एक अमराई में खेलने गया। गर्मी के दिन थे। बाहर सारा संसार तवे की तरह तप रहा था। लेकिन आम के पेड़ के नीचे ठण्डी छाँह फैली हुई थी। भगत और उसकी बहन दोनों बहुत देर तक खेलते रहे। आखिर जब थक गए तो छाँह मैं पीठ के बल लेट गए और ऊपर डालों की ओर देखने लगे। आम की डालों में अधपके फल लटक रहे थे। उन्हें देखकर उसकी बहन के मुँह में पानी भर आया। ललचाई आंखों से आम की ओर देखते हुए उसने कहा-"भैया ! देखो तो कैसे बढ़िया आम है? भैया ! मुझे आम तोड़ दो न ?"

बहन की बात सुनकर लड़के ने एक ढेला उठाया और एक अच्छे पके फल की ओर निशाना लगाकर फेंका। लेकिन न जाने कैसे निशाना चूक गया और ढेला आम को न लगकर उल्टे उसकी बहन को आ लगा। नन्ही सी जीव थी। वह उस चोट से

श्री माधब शर्मा



तिलमिला गई। आँखों के आगे अन्धेरा छा गया। पैरों तले से जमीन निकल गई और वह बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी। लड़के पर तो मानो वज्रपात हो गया। हाय ! उसने यह क्या कर डाला? लेकिन सोचने के लिए समय न था।

वह जानता था कि थोड़ी ही दूर पर इस बाग़ के कोने में एक तलैया है जो सब दिन मीठे पानी से भरी रहती है। बस , वह दौड़ता हुआ जाकर चुल्लू में ठण्डा पानी भर लाया और नीचे बैठकर अपनी बहन के मुंह पर पानी छिड़कने लगा। धीरे-धीरे उसको थोड़ा होश आने लगा और वह आँखें खोल कर इधर-उधर देखने लगी। लड़के ने सुख की साँस ली। खैरियत थी ! ढेला किसी नाजुक जगह पर नहीं लगा था। वरना जान पर आ बनती।

अब वह लड़का इस सोच में पड़ गया कि ढेला उसकी बहन को कैसे लगा। उसने तो पेड़ पर निशाना लगाकर फेंका था। ढेला वही, उसी का फेंका हुआ। बहुत देर तक सोच विचार कर उसने तय किया कि कोई ऐसी शक्ति है जो आँखों से ओझल रहती है और वह उसी की करतूत है। यह सोचकर उसे बड़ा गुस्सा आया। वह अपने आप बड़बड़ाया कि "वह शक्ति नाश हो जाए जिसे यह अन्याय किया है। "

इतने में उसकी बहन पूरी तरह होश में आ गई और उठ बैठी। यह देखकर वह बहुत खुश हुआ और बोला -"देखो, इस बार वह आम जरूर तोड़ देता हूँ।" यह कहकर उसने और एक ढेला उठाया और इस बार खूब निशाना लगाया। इस बार ढेला जा कर ठीक आम को लगा और आम डाल से

टूट कर अलग हो गया। लेकिन अजीब बात यह हुई कि न फल ही नीचे गिरा और न ढेला ही। दोनों आसमान में ऊपर ही उड़ने लगे। लड़के ने समझा थोड़ी दूर जाकर वे जरूर नीचे गिरेंगे। इसलिए वह उनके पीछे-पीछे दौड़ता गया। लेकिन वह फल और ढेला दोनों नीचे नहीं गिरे। वे उसी तरह आसमान में उड़ते ही गए। लड़का उनके पीछे दौड़ते हुए बहुत दूर चला गया। आखिर वह फल और ढेला दोनों जादू के घोड़े की तरह उड़ते उड़ते आसमान में गायब हो गए। वह लड़का लाचार होकर घर लौट आया। उसकी बहन बहुत देर तक उसकी राह देख-देख कर घर चली गई थी।

जब लड़का लौट कर घर आया तो उसकी माँ ने देखा कि वह बहुत ही थक गया है। उसका सारा बदन और कपड़े-लत्ते धूल से भरे हुए हैं। तब उसने झट नहाने के लिए पानी गर्म कर दिया। लड़का नहाने गया और लोटा पानी में डूबा कर सर पर उँड़ेला। लेकिन आश्चर्य ! बहुत हिलने डुलने पर भी लोटे से एक बूँद



भी पानी नहीं गिरा। आखिर उसे चुल्लू में ले लेकर तेल की तरह देह में मल मल कर नहाना पड़ा।

नहाने के बाद बहुत तौलिया लेने गया। तौलिया दीवार पर एक खूँटी पर टँगा हुआ था। लड़के का हाथ वहाँ तक नहीं पहुँच सकता था। इसलिए वह उछला। बस उछालना था कि वह उड़कर एक ही दम उसे पञ्च मञ्जिले मकान की ऊपरी छत पर पहुँच गया। उसकी बहन वहीँ थी। उसे यह देखकर बड़ा अचरज हुआ और वह जाकर लोगों को बुला लाई। लोग दौड़े आए और यह देखकर बड़े अचरज में पड़ गए। वे



कहने लगे -"अरे भगता ! तू तो बड़ा भारी पहलवान बन गया। पञ्च मञ्जिले मकान पर भी छलाँग मार कर चढ़ जाता है। अब तो कुछ दिन में तू आसमान में भी उड़ने लगेगा। इतने में उस लड़के की बहन ने उससे कहा -"भैया! भैया! कल मेरी गेन्द छत पर चली गई थी। जरा खोज कर उसे नीचे फेंक दो ना। " लड़के ने गेन्द ढूँढ निकाली और नीचे फेंकते फेंकते एक लात जमाई। अरे ! यह क्या हुआ ! वह संभल न सका और एक पल में नीचे आ गिरा। इतनी ऊँचाई पर से गिरने पर तो किसी की भी हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाती। लेकिन लड़के के भाग अच्छे थे। उसे उतनी ज्यादा चोट नहीं लगी। तुरन्त एक डॉक्टर ने आकर जाञ्च की और बताया कि डरने की कोई बात नहीं है। तब सब के जी में जी आया।

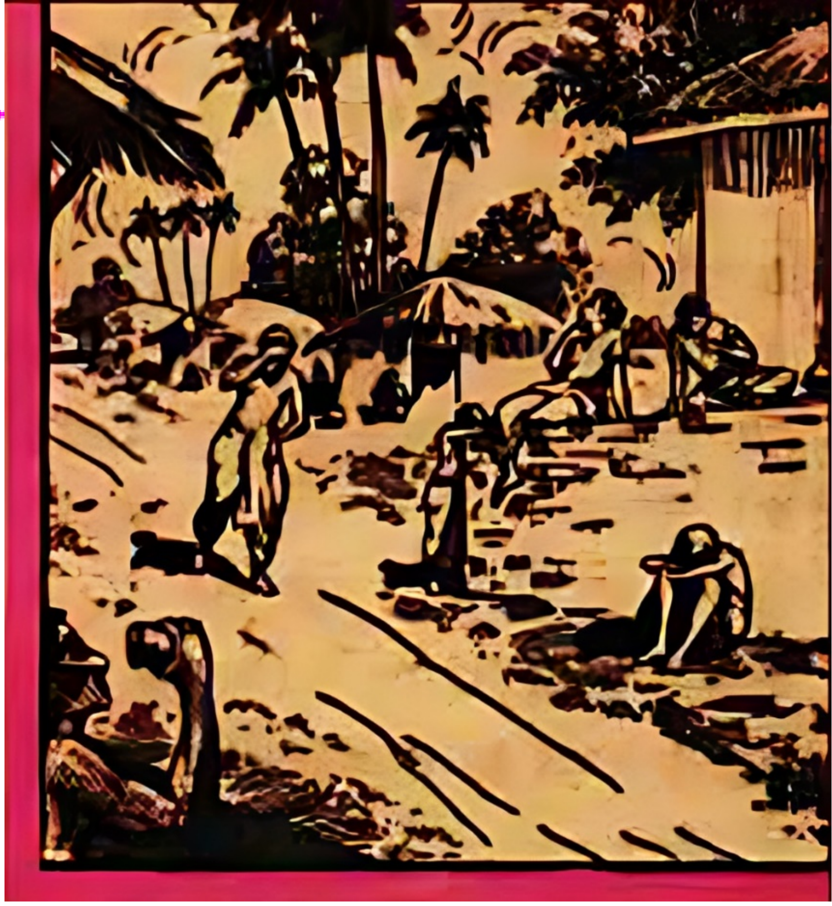
डॉक्टर ने इंजेक्शन देने के लिए पिचकारी निकली तो देखा क्या है की नली में दवा चढ़ती ही नहीं। उसने समझा -शायद पिचकारी खराब हो गई है। इसीलिए दूसरी पिचकारी निकाली। लेकिन उसमें भी दवा नहीं चढ़ी। डॉक्टर ने एक-एक करके कई पिचकारी आजमाई ; लेकिन किसी से काम ना चला। अब तो डॉक्टर भी घबरा गया। माथे से पसीना झरने लगा। आखिर इन पिचकारियों को हो किया गया है ? लोग यह सब देखकर क्या कहेंगे ? कहेंगे -इतना रुपया मिट्टी करके डॉक्टरी पास कर आए हैं, लेकिन एक छोटा सा इंजेक्शन नहीं दे सकते। अब वह किसी को कैसे मुँह दिखाएगा ?

डॉक्टर इसी उधेड़-बुन में पड़ा था कि अचानक उसकी मरीज़ मुस्कुराता उठ बैठा और पूछने लगा- "माँ ! मुझे क्या हो गया था? यह सब लोग

हमारे घर में क्यों जमा हुए हैं ?" जो लोग देखते हुए खड़े थे वह सब दाँतों तले ऊँगली दबाने लगे। कुछ लोगों ने समझा लड़के को हनुमान जी का इष्ट है। और कुछ ने समझा, उस पर भूत सवार है।

दूसरे दिन से उस लड़के के यार दोस्त भी यही जादूगरी दिखने लग। एक लड़का पच्चीस तीस गज की ऊँचाई तक उड़कर धीरे-धीरे नीचे उतर आया। दूसरा और भी ऊँचा उड़ा। तीसरा उड़ते उड़ते आसमान में गायब हो गया। एक पानी में पैदल चलने लगा तो दूसरा हवा में ही उड़ने लगा। एक लड़का दीवार पर चींटी की तरह रेंगने लगा तो दूसरा चमगादड़ की तरह छत से लटक गया। एक सर के वल हवा में चलने लगा तो दूसरा पीठ के बाल आसमान में तैरने लगा।

छोटे-छोटे लड़कों की बात छोड़ दो, बड़े बूढ़े भी यही तमाशा करने लगे। कुछ लोग तो गौरी शङ्कर की चोटी पर चढ़ जाना चाहते थे। लेकिन बर्फीले तूफानों के डर से हिम्मत ना पड़ी। पहले तो यह सब अनहोनी बातें देखकर लोगों को



अपनी ही आँखों पर विश्वास नहीं होता था। लेकिन थोड़े ही दिनों में यह बातें पुरानी पड़ गई और उनकी और कोई ध्यान देने वाला भी नहीं रहा। इससे और भी कई फायदे हुए। लोग अब भारी से भारी चीज भी आसानी से उठा लेते थे। बड़ी से बड़ी चट्टान भी इस तरह उठा लेते मानो वह कोई छोटा सा ढेला हो। शायद हनुमान जी ने सुमेरु पर्वत और कन्हैया ने गोवर्धन इसी तरह उठाया था। कुछ और भी छोटी-मोटी अद्भुत बातें देखने में आई। खुँटिओं के बगैर ही कोट टँगे रहते थे। चाय का प्याला मेज पर ही

नहीं , हवा में भी रखा रहता। कोई भी चीज टूट जाती तो उसके टुकड़े नीचे जमीन पर नहीं गिरते। जैसे के पैसे जुड़े रह जाते।

इससे लोगों को भारी दिक्कत भी हुई। जोर से प्यास लगने पर भी पानी गले के नीचे नहीं उतरता। नहाना भी कोई चीज है यह तो लोग भूल ही गए। रोज-रोज हवा में उमस बढ़ने लगी। बरसात के दिन आए और चले भी गए। एक बूंद भी पानी न बरसा। रेलें और मोटरें चलते-चलते लुढ़की खाने लगी। दिन-दिन साँस लेना भी मुश्किल होने लगा।

अब उस गाँव के बड़े-बूढ़े सब मिलकर सोचने लगे कि ऐसा क्यों हो रहा है ? वे गांव में हर एक आदमी से पूछताछ करने लगे। कुछ लोगों ने जो भक्त का प्रभाव जानते थे, उसे बुलाकर पूछा -"क्यों भगत ! क्या तुम जानते हो कि यह सब क्यों हो रहा है?" तब भगत ने सारा हाल उन्हें बता दिया। उसके मुँह से अचानक जो बात निकल गई , वह भी उन्हें सुना दी। सारा किस्सा सुनाने के बाद बड़े बूढ़ों ने उससे प्रार्थना की -"तुम अपने बोल लौटा लो। नहीं तो दुनिया चौपट हो जाएगी। " तब भगत ने अपने बोल लौटा लिए।

अब बड़े-बूढ़े समझ गए कि भगत के बोल के प्रभाव से जो शक्ति नष्ट हो गई थी , वह थी पृथ्वी की आकर्षण शक्ति। जब पृथ्वी ने चीजों को अपनी ओर खींचना छोड़ दिया तो थोड़ा सा धक्का लगते ही हर चीज मीलों दूर चली जाने लगी। सो भी धरती पर ही नहीं , आसमान में भी। जब हवा का दबाव जाता रहा, तो साँस लेना भी मुश्किल हो गया।

बच्चों ! कहीँ तुम भी भगत की तरह छत पर चढ़कर नीचे ना कूद पड़ना! बस हाथ पैर टूट जाएँगे।

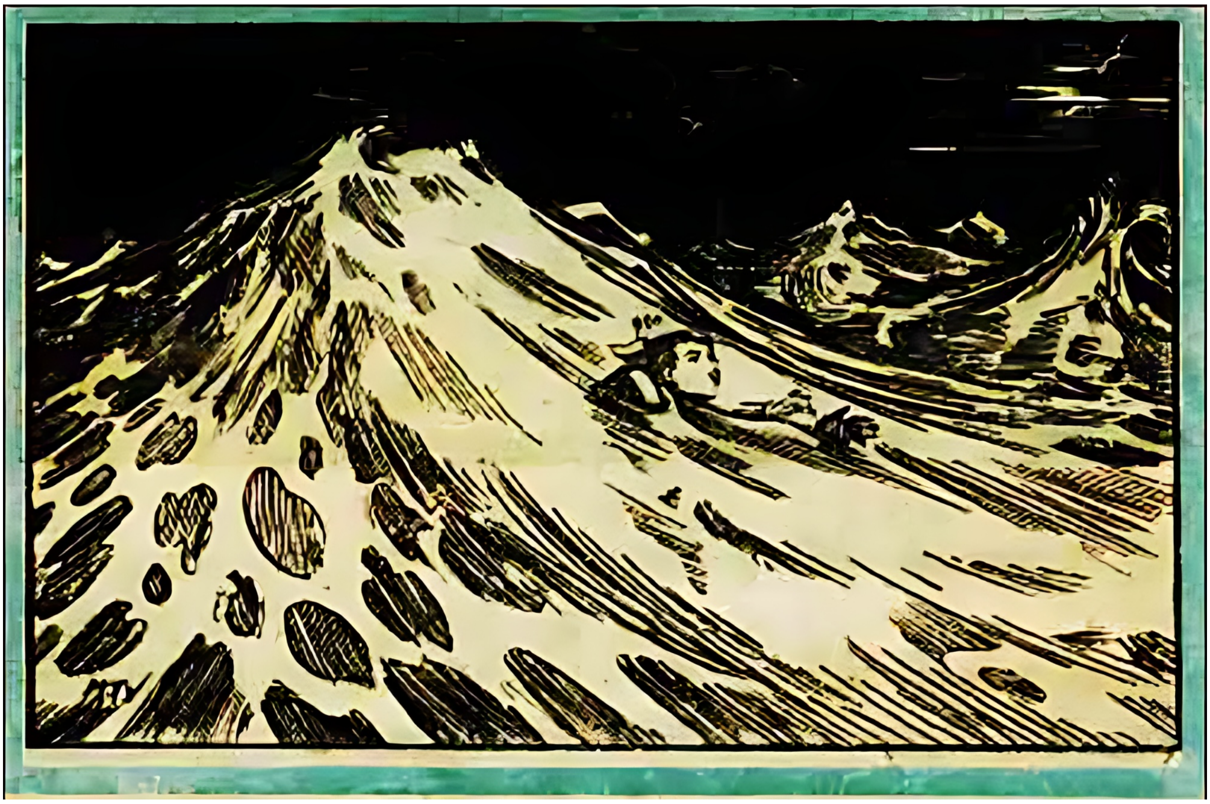




दो हज़ार बरस पहले पाटलिपुत्र में वर्धमान नाम का एक आदमी रहता था। उसका बाप बड़ा अमीर था। उसके पास बहुत से जहाज थे। देश-विदेश से उसका व्यापार चलता था। उसके आदमी जहाज पर चढ़कर दूर-दूर तक जाते थे। बहुत से विदेशी व्यापारी भी दुनिया के हर कोने से उसके यहाँ आया करते थे। वह अपने देश की अजीब अजीब कहानियाँ भी सुनाया करते थे। बचपन से ही उनके मुँह से यह सब कहानियाँ सुनते-सुनते वर्धमान के मन में भी देश देशान्तर घूमने की इच्छा पैदा हुई।

कुछ दिन बाद वर्धमान का बाप चल बसा। सारा व्यापार वर्तमान की मुट्ठी में आया। अब उसने एक बहुत बड़ा जहाज बनवाया और उस पर चढ़कर देश-विदेश घूमने की ठानी। उसने पहले ब्राम्हणों से पूजा करवाई। गरीबों और भिखमंगों को खाना कपड़ा बाँटा। व्यापार के लिए सब तरह का सामान खरीद कर जहाज पर लादा। तीन महीने भर के लिए खाने-पीने की चीज भी जहाज पर रख ली। फिर एक शुभ साइत में जहाज ने लङ्गर उठाया और पूर्वी टापू की तरफ चल पड़ा।

एक हफ्ते तक उनकी यात्रा में कोई विघ्न न आया। किन्तु आठवें दिन समुद्र में एक बड़ा तूफान उठा। यह तूफान बराबर बढ़ता गया। अन्त में उसने बड़ा विकराल रूप धारण किया। प्रचण्ड आँधी में जहाज एक सूखे पत्ते की तरह जिधर तिधर डोलता रहा। तीन दिन तक जहाज वालों को यह भी नहीं मालूम हुआ कि वह किस और बहे जा रहे हैं। इस



तरह भटकते हुए जहाज बीच समुद्र में एक चट्टान से जा टकराया और चूर-चूर हो गया। जहाज में जितने लोग थे सब के सब डूब गए। सारे हीरे-जवाहरात कपड़े-लत्ते और साज-सामान समुद्र के पेट में समा गए।

अकेला वर्धमान बचा रहा। उसे जहाज के एक टूटे मस्तूल का सहारा मिल गया था। वह जल्दी-जल्दी तैरने लगा। लेकिन कुछ ही देर में ऐसा थक गया कि सुध-बुध जाती रही। इस तरह न जाने वह कब तक बेहोश पड़ा रहा। जब होश में आया तो तूफान का कहीं नामोनिशान न था। आसमान साफ था। सूरज चमक रहा था। समुद्र भी शान्त था। उसने मस्तूल का सहारा छोड़ दिया और धीरे-धीरे तैरते हुए किनारे की तरफ बढ़ा। एकाएक उसके पैर जमीन से जा लगे और उसकी जान में जान आई। वह झपटकर किनारे पर पहुँच गया।

समुद्र का वह किनारा बिल्कुल सुनसान था। कहीं भी आदमी या जानवर का पता न था। अब उसे विश्वास हो गया कि उसकी जान बच गई। उसने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया। उस मैदान में मुलायम हरी घास उग रही थी। वह उस पर लेट गया।



अब दूसरे दिन उसकी नींद खुली तो पूर्व में पौ फट रही थी। उसे धीरे-धीरे कल की सभी बातें याद आ गई। वह जमीन पर से उठने की कोशिश करने लगा। लेकिन उठ न सका। उसके हाथ पैर जमीन से चिपक गए थे। वह सिर भी नहीं दिला सकता था। हजारों सूत के धागों से किसी ने उसे जमीन से जकड़ दिया था।

वर्धमान अचम्भे में पड़कर सोचने लगा कि यह सब क्या हुआ ! इतने में उसे ऐसा मालूम हुआ मानो कोई जीव उसके पैरों पर रेंग रहा है। वह जीव धीरे-धीरे उसकी छाती पर आ गया। वर्धमान ने मुश्किल से कर उठा कर देखा तो मालूम हुआ कि वह एक नाटा सा आदमी है। वह आदमी सिर्फ छः अंगुल लम्बा था। उसके हाथ में एक धनुष था और पीठ पर एक तरकस।

उसे जीव ने जान लिया कि वर्धमान जगा हुआ है। उसने महीन आवाज में कुछ कहा। तुरंत कोई पचास बौने भुनगों की तरह उसे पर रेंगने लगे। वह भी पहले आदमी की ही तरह छोटे और बौने थे।



वर्धमान ने उनसे पूछा -"आप लोग कौन है ? मुझे क्यों इस तरह बाँध रखा है ?" शायद वर्धमान की आवाज उन्हें बादलों की गड़गड़ाहट सी जान पड़ी होगी। क्योंकि वह सब लोग डरकर भागने लगे। जल्दबाजी में कुछ लोग फिसल कर गिर भी पड़े और उनके हाथ पैर टूट गए।

वर्धमान ने जान लिया कि उनसे पूछने से कोई फायदा न होगा। उसने हाथ को एक झटका दिया। बस ! सब धागे तड़तड़ा कर टूट गए। इसी तरह उसने पैरों के बन्धन भी तोड़ दिए। वह देखते ही वे नए लोग समझ गए कि उनका कैदी बचकर भाग जाना चाहता है। बस, अब क्या था ! उन्होंने दूर से ही उस पर छोटे-छोटे तीरों की वर्षा कर दी। वह छोटे-छोटे सुइयों के से तीर वर्धमान के कपड़ों पर लगकर चुभ गए और बदन तक नहीं पहुँच सके। लेकिन जो तीर मुँह पर आकर लगे, उनके चुभने से चींटियों के काटने की सी पीड़ा होने लगी।

अब वर्धमान को यह जानने की इच्छा हुई कि यह लोग क्या करना चाहते हैं। वह बिना हिले-डुले चुपचाप पड़ा रहा।

कुछ देर बाद वे बौने डरते-डरते वर्धमान के पास आने लगे। उनमें से एक तो वर्तमान के एकदम नजदीक आ गया और उसके कान में चिल्ला कर कुछ कहा। पर वह भाषा वर्धमान की समझ में कुछ भी न आई। उसने इशारे से बताया कि उसे बहुत भूख लगी है। तुरन्त वे लोग जाकर खाने-पीने की चीज ले आए। हजारों आदमी उसके मुँह पर चढ़ गए और उसके खुले हुए मुँह में खाने पीने की चीज डालने लगे।





किसी तरह पेट भरने के बाद वह फिर सो गया।

वर्धमान जिस टापू में था उसका नाम था "बामन द्वीप"। वहाँ के सब लोग नाटे और बौने थे। जब वहाँ के राजा को मालूम हुआ कि उसके देश में कोई बड़ा भारी दैत्य आया है, तो उसने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी -"जाओ, उसे कैद कर ले आओ।" इस काम के लिए उसने एक गाड़ी भी भेजी जो उसके राज में सबसे बड़ी थी। यह गाड़ी सात फुट लम्बी और चार फुट चौड़ी थी। उस गाड़ी में बाइस पहिए लगे थे। जब वह गाड़ी वर्धमान के पास पहुँची, तब वह मुर्दों से बाजी लगाकर सो रहा था। हजारों बौनों ने बड़ी मुश्किल से उसे उठाकर गाड़ी पर चढ़ा लिया। अब भी वर्धमान की आँखें न खुली। बात यह थी कि उन्होंने उसके खाने-पीने की चीजों में कोई ऐसी दवा मिला दी थी जिससे वह बेहोश पड़ा रहा।

राजा का महल वहाँ से आधे मिल की दूरी पर था। वर्तमान की गाड़ी में पन्द्रह सौ घोड़े जोते गए थे। एक-एक घोड़ा साढे चार चार अंगुल का था। वह गाड़ी इस तरह साढ़े चार घण्टे तक चलती रही। इतने में उसकी एक धुरी टूट गई। उसको ठीक करने के लिए गाड़ी रोक ली गई। यह मौका पाते ही वर्धमान को देखने के लिए कुछ बौने उसके मुँह पर चढ़ गए। उनमें से एक ने अपनी छड़ी वर्धमान की नाक में घुसेड दी और उससे टटोलने लगा। बस, क्या था ! वर्धमान को छींक पर छींक आने लगी। वह एक-एक छींक क्या थी कि बेचारे बौनों के लिए बम का एक-एक गोला ही था। अब तो वहाँ कोलाहल मचने लगा।



बहुत से लोग उसके मुँह पर से नीचे गिर पड़े। कितने ही लोगों को करारी चोटें आई। आखिर धुरी ठीक हुई और खड़खड़ करती गाड़ी फिर रवाना हुई।

कुछ देर के बाद अन्धेरा हो गया। बौने मञ्जिल पर पहुँच कर रुक गए। पाँच सौ बौनों ने रात भर जागकर चारों तरफ घूम-घूम कर पहरा दिया। अनगिनत मशालें जलाई गई। बौने सिपाही धनुष पर तीर चढ़ाए अकड़ के साथ खड़े थे। सवेरा होते ही सब लोग फिर रवाना हुए। दोपहर होते-होते गाड़ी राजधानी से एक फलाँग की दूरी पर रुक गई।

वर्धमान को देखने के लिए बौने-महाराज खुद अपने सब दरबारियों के साथ वहाँ पधारे। उनमें से कुछ दरबारियों ने राजा को सावधान कर दिया कि वर्धमान के बदन पर चढ़ना अच्छा न होगा।

वहीँ एक बहुत बड़ा पुराना मन्दिर था। अब उस उजड़े मन्दिर में पूजा अर्चना नहीं होती थी। निश्चय हुआ कि वर्धमान को उसी में रखा जाए। क्योंकि उसे शहर में वही एक ऐसी जगह थी जो उसके लिए काफी लम्बी चौड़ी थी।

राजा के लोहार आए। उन्होंने सौ जञ्जीरों से वर्धमान के हाथ पैर जकड़ दिए। उन जञ्जीरों को उसे मन्दिर की किवाड़ों में जड़ दिया गया। फिर उसके हाथ पैर के धागे काट दिए गए। अब लोहे की जिन जञ्जीरों से वर्तमान को बाँधा गया था, वह हमारे देश की औरतों के पैरों की सोने चाँदी की कड़ियों से ज्यादा मोटी न थी। उनकी लम्बाई भी बहुत कम थी। वह ऐसा जकड़ गया था कि हिलडुल भी नहीं सकता था।

[और भी है]





रंग - बिरंगे तोते